International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
Online ISSN: 2582-3493
Received: 01-09-2019; Accepted: 03-10-2019; Published: 16-11-2019
Volume 1; Issue 2; 2019; Page No. 16-19

आगरा जनपद में पशु सम्पदा की वर्तमान स्थिति एक भौगोलिक अध्ययन

नेलिया लोइस डेविड [1], भरत कुमार [2]
[1] (एसोसिएट प्रो.) भूगोल विभाग, सेंट जोन्स कॉलेज आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] (असिस्टेन्ट प्रो.) भूगोल विभाग, श्री अग्रसेन कन्या पी.जी. महाविद्यालय, बयाना, राजस्थान, भारत

सारांश

आदिकाल से ग्रामीण एवं कृषि प्रधान देश रहा है अतः कृषि और सहायक कार्यो में पशुओं का विशेष स्थान रहा है। खेती करना, बोझा ढोने, यातायात साधन के रूप में इसका प्रयोग होता आ रहा है। इससे दूध, दही, मक्खन, ऊन, चमड़ा, कम्पोस्ट खाद आदि की प्राप्ति होती है। इसका विशेष महत्व है इसलिए इसे पशु संसाधन कहना उचित होगा। भारत में बीसवीं पशु गणना - 2012 के अनुसार पशुओ की संख्या 51.2 करोड़ और पशु गणना 2019 में 53.6 करोड़ दर्ज की गई है। 2012 से 2019 के बीच 4.6 प्रतिशत पशु सम्पदा में वृद्धि दर्ज की गई है। वहीं उत्तरप्रदेश में पशु गणना 2012 के अनुसार भारत के 4 प्रतिशत अर्थात 1.96 करोड़ पशु थे जिनकी संख्या घटकर 2019 में 1.88 करोड रह गई है अर्थात भारत की कुल पशु सम्पदा का 3.83 प्रतिशत है। शोध पत्र आगरा जनपद में पशु सम्पदा की वर्तमान स्थिति का क्षेत्र आगरा जनपद उत्तरप्रदेशराज्य के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित है। यह ऊपरी गंगा मैदान के दक्षिणी भाग का हिस्सा है। आगरा जनपद की कृषि में पशुओं का विशेष महत्व है। इससे कृशकों को गोबर, मूत्र, हड्डी तथा खून के रूप में खाद प्राप्त होती हैं पशु कुंओं से पानी निकालने, खेतों को जोतने तथा अनाज की मण्डियों तक ले जाने का कार्य करते है। ये यातायात तथा भार ढोने के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। पशुपालन से स्वरोजगार प्राप्त होता है इनसे दूध, मांस, ऊन, खाल (चमड़ा) हड्डी जैसी कच्ची सामग्री प्राप्त होती है। इन सभी के निर्यात से आगरा जनपद के निवासियों को करोड़ों रुपये की आय प्राप्त होती है। आगरा जनपद में पशुपालन के अन्तर्गत गोवंशीय पशु (गाय, बैल, बछड़ा), महिषवंशी पशु (भैंस, भैंसे, पड्डु आदि) भेड़, बकरी, सूअर, घोड़ा आदि पाले जाते हैं। जनपद के कुछ क्षेत्रों के कृषक कुक्कुट पालन भी करते है। आगरा जनपद में गौवंशी पशुओं में गाय-बैल, बछडा-बछिया व सांड प्रमुख है। आगरा जनपद की सांख्यिकी पत्रिका-2018 के अनुसार वर्ष 2012 की पशु जनगणना के अनुसार जनपद में कुल गौवंशी पशु 210964 है। आगरा जनपद में वर्ष 2012 के आकडों के अनुसार 927781 महिषवंशीय पशु पाले गये थे। इनमें 2 वर्ष से अधिक के नर 9196 , 3 वर्ष से अधिक की मादा 494889 और पडा व पड़िया 423696 पाले गये। आगरा जनपद में आलू की कृषि का विस्तार हो रहा है जिससे हरे चारे में कमी आ रही है और पशुओं को पौष्टिक आहार नहीं मिल पा रहा है जिससे पशु कम दूध देते है और यहां पशुओं को चारे के रूप में डठंल व भूसा खिलाया जाता है जिससे पशु कमजोर होते है और दूध भी माँस की कम प्राप्ति होती है। जो पशुपालक कृषक भी है वे अपने खेतों में हरे चारे को बढावा दें जिससे पशुओं को पौष्टिक आहार का चारा मिल सके और जिससे पशुओं से दूध की अधिक प्राप्ति हो सके।

हम पशुधन की घटती दर को काफी हद तक सही कर सकते है व घटते पशुधन में वृद्धि करने के लिए पशुपालक को जागरूक होना पडेगा साथ ही सरकार के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को पशुपालक तक पहुचाने के लिए सही ढंग से क्रियान्वित करना होगा तभी पशुधन में वृद्धि सम्भव है। वहीं सरकार के द्वारा खोले गये पशु चिकित्सालय, पशु औशधालय, पशु सेवा केन्द्र और कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों पर निर्धारित कर्मचारी नियुक्त किये जावें। जिससे पशु सम्पदा की स्थिति बेहतर हो।

मूल शब्द: वर्तमान, कृषि, पशुपालक, कर्मचारी, गर्भाधान, पशु

प्रस्तावना

प्रत्येक राज्य की अर्थव्यवस्था में पशुओं का स्थान सबसे महत्वपूर्ण होता है। राज्य में इसे पशु सम्पदा ही नहीं बल्कि पशु संसाधन ही कहना उचित होगा। प्रो. डार्लिंग के अनुसार " पशुओं के बिना खेत बिना जुते पडे रहते है, खलियान खाद्यान्नों के अभाव खाली पडे रहते है तथा एक शाकाहारी देश में इससे अधिक दुःखदायी बात क्या हो सकती है कि पशुओ के अभाव में घी, दूध, मक्खन, पनीर एवं अन्य पशु उत्पादकों आदि पौष्टिक पदार्थो की प्राप्ति का ही अकाल पड़ सकता है।"

भारत आदिकाल से ग्रामीण एवं कृषि प्रधान देश रहा है अतः कृषि और सहायक कार्यो में पशुओं का विशेष स्थान रहा है। खेती करना, बोझा ढोने, यातायात साधन के रूप में इसका प्रयोग होता आ रहा है। इससे दूध, दही, मक्खन, ऊन, चमड़ा, कम्पोस्ट खाद आदि की प्राप्ति होती है। इसका विशेष महत्व है इसलिए इसे पशु संसाधन कहना उचित होगा। भारत में बीसवीं पशु गणना - 2012 के अनुसार पशुओ की संख्या 51.2 करोड़ और पशु गणना 2019 में 53.6 करोड़ दर्ज की गई है। 2012 से 2019 के बीच 4.6 प्रतिशत पशु सम्पदा में वृद्धि दर्ज की गई है। वहीं उत्तरप्रदेश में पशु गणना 2012 के अनुसार भारत के 4 प्रतिशत अर्थात 1.96 करोड़ पशु थे जिनकी संख्या घटकर 2019 में 1.88 करोड रह गई है अर्थात भारत की कुल पशु सम्पदा का 3.83 प्रतिशत है।

अध्ययन क्षेत्र:- शोध पत्र आगरा जनपद में पशु सम्पदा की वर्तमान स्थिति का क्षेत्र आगरा जनपद उत्तरप्रदेश राज्य के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित है। यह ऊपरी गंगा मैदान के दक्षिणी भाग का हिस्सा है। आगरा जनपद 260-44' उत्तरी अंक्षाश से 270-24' उत्तरी अंक्षाश एवं 770-28' पूर्वी देशान्तर से 780-54' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में मथुरा, महामायानगर (हाथरस) एवं एटा जनपद, पूर्व में फिरोजाबाद और दक्षिण-पूर्व में इटावा जनपद हैं, इसके पष्चिम और दक्षिण पश्चिम में राजस्थान राज्य का भरतपुर जिला, दक्षिण में धौलपुर जिला (राज.), एवं मुरैना जिला (मध्यप्रदेश) स्थित है। आगरा जनपद का क्षेत्रफल 4041 वर्ग किमी. (जनगणना-2011) है जो उत्तर प्रदेश राज्य का 1.36 भाग है।

आगरा जनपद का तहसील अनुसर अध्ययन क्षेत्र मानचित्र

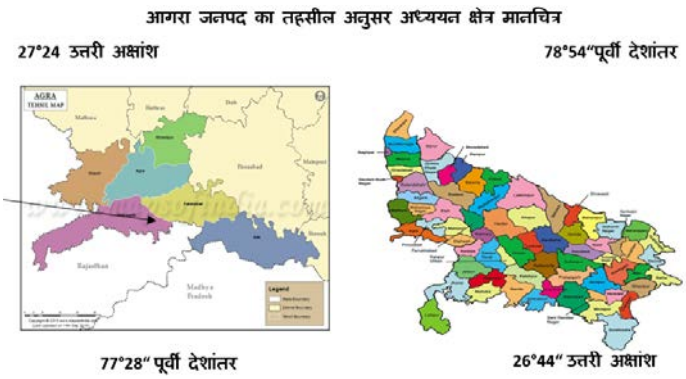

शोधपत्र का उद्देश्य: भारत एक मिश्रित कृषि वाला देश है। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार भारत की 54.60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लगी हुई है। अधिकांश कृषक कृषि के साथ-साथ पशुपालन का भी कार्य करते है। अगर हम आगरा जनपद के कृशकों को देखे तो अधिकांशतः ग्रामीण कृषक कृषि के साथ पशुपालन भी करते है। यंहा पशुओं के रूप में गाय, भैंस, भेड, बकरी, ऊँट, कुक्कुट पालन का कार्य होता है। लेकिन यंहा पशुओं की स्थिति अधिक पिछडी हुई है। यंहा पर सरकारी योजनाओं का सही ढंग से क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है इसका मुख्य कारण सरकारी योजनाओं का लोगों तक पहुँच न होना है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन परम्परागत तरीके से होता है। जिससे ग्रामीणों को सही ढंग से दूध, मक्खन, घी, छाछ, माँस, ऊन आदि की प्राप्ति नहीं हो पाती है लेकिन यदि हम पशुपालन वैज्ञानिक और तकनीकी ढंग से करते है तो पशु सम्पदा को बढाया जा सकता है। पशु सम्पदा बढने के साथ-साथ किसानों की आय बढेगी और आय बढने से आर्थिक विकास होगा जिससे हमारी जीडीपी में भी वृद्धि होगी और राज्य व राष्ट्र का विकास होगा। अतः शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य पशु सम्पदा को बढावा देना है।

विधि तंत्र: शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीयक आँकडो का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने प्राथमिक आँकडो के अनुसार आगरा जनपद में मिलने वाले 15 ब्लॉक का सर्वेक्षण किया है और सर्वेक्षण के माध्यम से आगरा जनपद में मिलने वाली पशुओ की स्थिति की पहचान की है। आगरा जनपद में वे क्षेत्र जंहा पशुधन अधिक या कम है, की पहचान की गयी है। सर्वेक्षण प्राथमिक आँकडो में साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है। आगरा जनपद में पशु संसाधन की स्थिति क्या है? घटते पशु संसाधन का समाधान कैसे किया जा सकता है तथा पशुओं की संख्या में वृद्धि कैसे की जा सकती है। वहीं द्वितीयक आँकडो के अन्तर्गत पत्र-पत्रिकाओं, सांख्यिकी, अखवार, इन्टरनेट, पुस्तकों के आँकडो को लिया है।

विषय विवेचन: पशुपालन (Livestockings) आगरा जनपद की कृषि में पशुओं का विशेष महत्व है। इससे कृशकों को गोबर, मूत्र, हड्डी तथा खून के रूप में खाद प्राप्त होती हैं पशु कुंओं से पानी निकालने, खेतों को जोतने तथा अनाज की मण्डियों तक ले जाने का कार्य करते है। ये यातायात तथा भार ढोने के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। पशुपालन से स्वरोजगार प्राप्त होता है इनसे दूध, मांस, ऊन, खाल (चमड़ा) हड्डी जैसी कच्ची सामग्री प्राप्त होती है। इन सभी के निर्यात से आगरा जनपद के निवासियों को करोड़ों रुपये की आय प्राप्त होती है। आगरा जनपद में पशुपालन के अन्तर्गत गोवंशीय पशु (गाय, बैल, बछड़ा), महिषवंशी पशु (भैंस, भैंसे, पड्डु आदि) भेड़, बकरी, सूअर, घोड़ा आदि पाले जाते हैं। जनपद के कुछ क्षेत्रों के कृशक कुक्कुट पालन भी करते है।

गौवंशी पशु: आगरा जनपद में गौवंशी पशुओं में गाय-बैल, बछडा-बछिया व सांड प्रमुख है। आगरा जनपद की सांख्यिकी पत्रिका-2018 के अनुसार वर्ष 2012 की पशु जनगणना के अनुसार जनपद में कुल गौवंशी पशु 210964 है जिनमें देशी 3507 नर गौवंशी 3 वर्ष से अधिक आयु के 2434 मादा गौवंशी पशु और 33493 मादा गौवंशी और 22993 बछड़ा-बछियों का पालन होता है। इन सभी का विवरण निम्नलिखित तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1: आगरा जनपद - गौवंशी पशुओं का पालन-2012

क्रमांक	विकासखंड का नाम	देसी गौवंशी	संकर गौवंशी	योग
1-	फतेहपुर सीकरी	8075	3520	11595
2-	अछनेरा	12594	3962	16556
3-	अकोला	6876	3467	10343
4-	बिचपुरी	5020	3508	8528
5-	बरौली अहीर	8766	4334	13100
6-	खंदौली	5153	2761	7914
7-	एत्मादपुर	7703	2600	10303
8-	जगनेर	7102	2393	9495
9-	खेरागढ़	6028	2451	8479
10-	सैया	6184	2336	8520
11-	शमसाबाद	9526	3306	12832
12-	फतेहाबाद	10146	3459	13623
13-	पिनाहट	15048	4811	19859
14-	बाह	16293	6642	22935
15-	जैतपुर कलां	19902	4328	24230
ग्रामीण योग		144434	53878	198312
नगरीय योग		7610	5042	12652
कुल योग		152044	58920	210964

स्रोत - सांख्यिकी पत्रिका-2018

जनपद में जैतपुर कलां, बाह, पिनाहट, अछनेरा, बरौली अहीर विकास खण्डों में क्रमश: 24230, 22935, 19859, 16556, 13100 गौवंशी पशु पाले गये थे। विस्तृत जानकारी के लिये उक्त तालिका देखें।

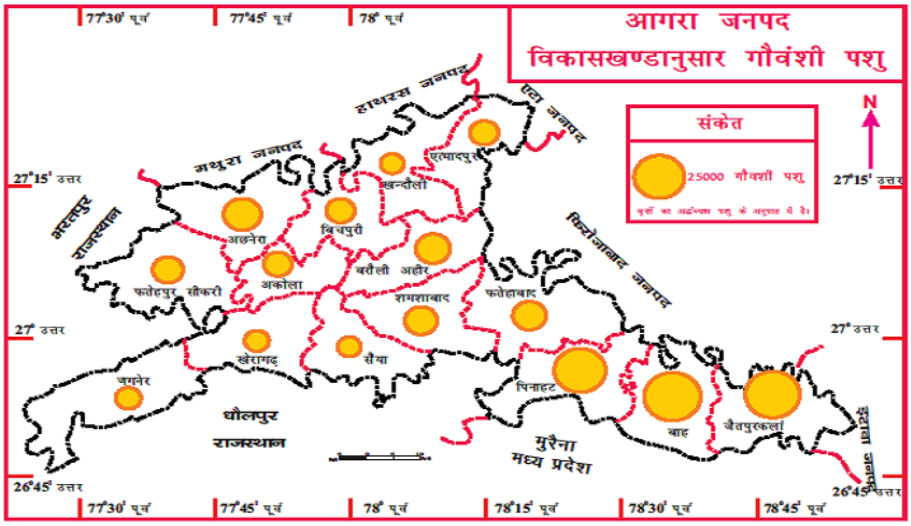

महिषवंशीय पशु - आगरा जनपद में महिषवंशीय पशुओं में भैंस, भैंसा, पडा (भैसें का नर बच्चा), पड़िया (भैंस का मादा बच्चा) आदि सम्मिलित है। आगरा जनपद में गौवंशीय की तुलना में महिषवंशीय पशु अधिक पाले जाते है। भैंसे का दूध अधिक पौष्टिक, भारी और चिकना होता हैं आगरा जनपद में मुर्रा और भदाबरी नस्ल की भैंस अधिक पाली जाती है। मुर्रा भैंस, खन्दौली, एत्मादपुर, अछनेरा और फतेहपुर सीकरी विकास खण्डों में और भदावरी भैंस बाह, पिनाहट, जैतपुर कलां, फतेहाबाद और खेरागढ़ विकास खण्डों में अधिक पाली जाती हैं। आगरा जनपद में वर्ष 2012 के आकडों के अनुसार 927781 महिषवंशीय पशु पाले गये थे। इनमें 2 वर्ष से अधिक के नर 9196 , 3 वर्ष से अधिक की मादा 494889 और पडा व पड़िया 423696 पाले गये।

तालिका 2: आगरा जनपद में महिशवंशी पशुओं का पालन 2012

क्रमांक	विकासखंड का नाम	नर महिशवंशी	मादा महिशवंशी	नर व मादा बच्चे	कुल योग
1-	फतेहपुर सीकरी	8075	38243	34006	72778
2-	अछनेरा	12594	44736	31915	77149
3-	अकोला	6876	38311	27464	66276
4-	बिचपुरी	5020	22155	17813	40447
5-	बरौली अहीर	8766	31365	25078	56949
6-	खंदौली	5153	25362	18109	43949
7-	एत्मादपुर	7703	31598	21768	53863
8-	जगनेर	7102	24164	16508	41051
9-	खेरागढ़	6028	24666	24978	50143
10-	सैया	6184	34983	24860	60386
11-	शमसाबाद	9526	39262	32098	71971
12-	फतेहाबाद	10146	41072	32398	74102
13-	पिनाहट	15048	22973	31077	54828
14-	बाह	16293	23060	34106	58035
15-	जैतपुर कलां	19902	23517	31878	56303
ग्रामीण योग		8707	465467	404056	878230
नगरीय योग		489	29422	19640	495551
कुल योग		9196	4094889	423696	927781

स्रोत - सांख्यिकी पत्रिका-2018

भेड़-बकरी पालन - आगरा जनपद में जैतपुर कलां, बाह, पिनाहट विकास खण्डों में भेड़ और बकरियां बहुत पाली जाती है। भेड का पालन ऊन, दूध व मांस के लिऐ तथा बकरी का पालन दूध, मांस ,खाल, चमड़ा व बाल के लिए पाली जाती है। आगरा में जमुनापुरी व बरबरी वंशीय बकरियाँ पाली जाती है। सर्वाधिक भेड आगरा जनपद के बाह विकासखण्ड में 14326 तक सबसे कम बिचपुरी विकासखण्ड में 277 है तथा सर्वाधिक जैतपुर कलां विकासखण्ड में 29981 व सबसे कम सैया विकास खण्ड में 7539 पाली जाती है है। आगरा में भेड़-बकरी पालन की विस्तृत जानकारी निम्न तालिका में प्रस्तुत है।

तालिका 3: आगरा जनपद - भेड-बकरी पालन -2012

क्रमांक	विकासखंड का नाम	भेड़			बकरी
		शुद्ध	संकर	योग	
1-	फतेहपुर सीकरी	903	297	1200	17350
2-	अछनेरा	809	192	1001	19744
3-	अकोला	269	179	458	20857
4-	बिचपुरी	109	168	277	10781
5-	बरौली अहीर	210	177	387	12949
6-	खंदौली	105	169	274	11698
7-	एत्मादपुर	619	139	758	15857
8-	जगनेर	1078	486	1564	15883
9-	खेरागढ़	1048	278	1326	21359
10-	सैया	379	118	497	7539
11-	शमसाबाद	1207	336	1543	21981
12-	फतेहाबाद	1305	348	1653	25178
13-	पिनाहट	9805	611	10416	27635
14-	बाह	13142	1184	14326	28732
15-	जैतपुर कलां	13106	1207	14313	29981
ग्रामीण योग		44094	5899	49993	287524
नगरीय योग		190	51	241	17092
कुल योग		44284	5950	50234	304616

स्रोत - सांख्यिकी पत्रिका-2018

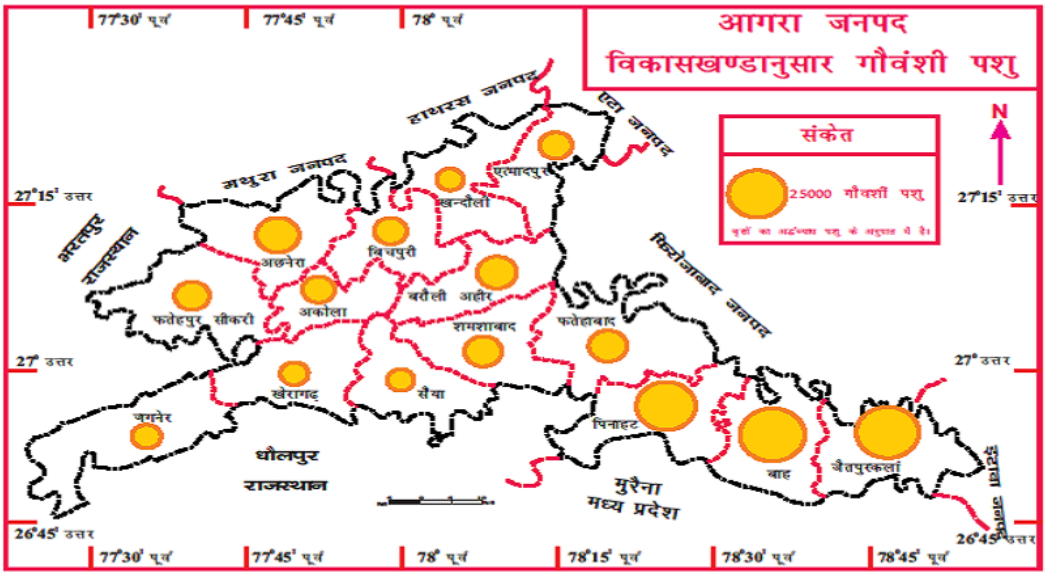

सूअर पालन - सूअर एक गन्दा पशु होता हैं जो अधिकतर विस्टा, अनाज के बचे खुचे, अंशो और अन्य गन्दगी पर निर्भर होता हैं। इसका पालन निम्न जातियों के लोग ही करते हैं। सूअर में कई गुण होते हैं इसकी संख्या आश्चर्यजनक तरीके से बढ़ती है। इसके बाल कड़े होते है। जिनका प्रयोग ब्रुशबनाने में किया जाता है। इसका मांस सस्ता, प्रोटीनयुक्त व विषेश चर्बी युक्त होने के कारण खाने में काम आता है।

पशुगणना 2012 के आंकड़ों के अनुसार आगरा जनपद में 38464 सूअर पाले गये थे। अकोला विकासखण्ड में सर्वाधिक 4619 सूअर और सबसे कम 1058 सूअर खन्दौली विकास खण्ड में पाले गये थे।

अन्य पशु पालन - उक्त पशुओं के अलावा आगरा जनपद में कुक्कुट पालन होता है यंहा 2012 की पशुगणना के अनुसार ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में कुल 157409 कुक्कुट पाले गये। जिनमें सर्वाधिक कुक्कुट अकोला मे 11749 व सबसे कम 7613 खंदौली मे पाले गये थे। यंहा पशुपालन का कार्य भी होता है। 2012 के आंकड़ो के अनुसार 341530 रूपये का मत्स्य पालन किया गया। यंहा सर्वाधिक मत्सय पालन अछनैरा में 63585 रूपये तथा जगनेर व शमशाबाद विकासखण्ड में मत्स्य पालन बिल्कुल नहीं किया गया था।

आगरा जनपद में पशुपालन की समस्याऐं

उत्तर प्रदेश राज्य में पशुओं की संख्या 2012 के आँकडो की तुलना में 2019 में कम हुई है। अर्थात उत्तर प्रदेश में जंहा पहले 2012 में 1.96 करोड पशु थे जो 2019 में घटकर के 1.88 करोड रह गये है। यह घटते पशुओ की स्थिति चिंता का विषय है हालांकि गौवंशीय पशुओं में वृद्धि हुई है जबकि अन्य पशुओं में कमी आई है। आगरा में भी पशुओं में कमी देखी गई है। इस कम होते पशुपालन का मुख्य कारण निम्नलिखित है

1. आगरा जनपद में आलू की कृषि का विस्तार हो रहा है जिससे हरे चारे में कमी आ रही है और पशुओं को पौष्टिक आहार नहीं मिल पा रहा है जिससे पशु कम दूध देते है और यंहा पशुओं को चारे के रूप में डठंल व भूसा खिलाया जाता है जिससे पशु कमजोर होते है और दूध भी मांस की कम प्राप्ति होती है।
2. आगरा जनपद में अधिक दूध देने वाले पशुओं की संख्य कम है इसलिए यंहा दूध की कम प्राप्ति होती है। यंहा ऐसे पशु अधिक पाले जाते है जो दूध कम देते है।
3. आगरा जनपद में अच्छी पशु नस्लों का अभाव है यंहा 2017-18 तक मात्र 47 पशु चिकित्सालय, 6 डी श्रेणी के पशु औशधालय, 51 पशु सेवा केन्द्र, और 92 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र है जो जनसंख्या की तुलना में काफी कम है।
4. आगरा जनपद में अधिकांशत: पशु एक ही बाडे में रखे जाते है और सड़ा-गला खाने से तथा गंदा जल पीने से अनेक पशुओं के आपस में सम्पर्क जन्य रोग हो जाता है। वर्षा में खुरपका, मुंहपका, गलघोटू जैसे रोग हो जाते है जिससे पशुओं की मृत्यु होती है।
5. अधिकांशतः पशुपालक अज्ञान व लापरवाह होते है ये मौसम के अनुसार पशुओं के रहने के लिए बाडे नहीं बनाते है और न हीं पशुओं को वैज्ञानिक ढंग से पालते है जिससे पशुओं की संख्या कम होती जाती है।

आगरा जनपद में पशुपालन की समस्या का समाधान

आगरा जनपद में कम होती पशुसम्पदा को बढाया जा सकता है इसके लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है

1. जो पशुपालक कृशक भी है वे अपने खेतों में हरे चारे को बढावा दें जिससे पशुओं को पौष्टिक आहार का चारा मिल सके और जिससे पशुओं से दूध की अधिक प्राप्ति हो सके।
2. 2. बीमार पशुओं को अधिक दूरी तक ले जाया जाता है आगरा में मात्र 47 पशुचिकित्सालय, 6 डी श्रेणी के पशुऔशधालय, 51 पशुसेवा केन्द्र, और 92 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र होने के कारण पशुओं की मृत्यु हो जाती है। अतः सरकार को अधिक पशु चिकित्सालय ग्रामीण स्तर पर खोले जाने चाहिए। व समय-समय पर टीकाकरण किया जाना भी आवश्यक है।
3. 3. ग्रामीण क्षेत्रो में वैज्ञानिक ढंग से पशुपालन के तरीकों को गाँव- गाँव में प्रचार-प्रसार किया जाये जिससे कम पशुओं से ही अधिक दूध, मांश, ऊन प्राप्त किया जा सके एवं उनकी स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जायें। जिससे उनकी अकाल मृत्यु न हो।
4. ग्रामीण क्षेत्रो में प्रत्येक महीने में पशु चिकित्सक के द्वारा संगोष्ठी आयोजित की जाये जिससे पशुपालन में वृद्धि हो सकें।
5. 5. केन्द्र सरकार व राज्य सरकार के द्वारा चलाई जा रही पशुपालन की 23 योजनाओं को सही ढंग से क्रियान्वित किया जावे जिससे पशुधन में वृद्धि हो सके। इनमे कुछ योजनाओं निम्न है:-

(क) गाय/भैसों में कृत्रिम गर्भाधान एवं प्राकृतिक गर्भाधान द्वारा पशुप्रजनन की सुविधाओं का सुधान एवं विस्तार कराने की योजना (जिला योजना)

(ख) खुरपका, मुंहपका, रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एफ.एम.डी.सी. पी.) 100 प्रतिशत केन्द्र पोषित

(ग) पशु रोगो के नियत्रंण हेतु राज्यों को सहायता (एस्कैड) 75 प्रतिशत केन्द्र पोषित

(घ) पशु आरोग्य मेलो का आयोजन

(ड) जोखिम प्रबंधन एवं पशुधन बीमा योजना

(च) कृत्रिम गर्भाधान योजना

निष्कर्ष: शोध पत्र का यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उपर्युक्त दिये गये सुझावों को यदि सही ढंग से अमल में लाया जाये तो हम पशुधन की घटती दर को काफी हद तक सही कर सकते है व घटते पशुधन में वृद्धि करने के लिए पशुपालक को जागरूक होना पडेगा साथ ही सरकार के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को पशुपालक तक पहुँचाने के लिए सही ढंग से क्रियान्वित करना होगा तभ पशुधन में वृद्धि सम्भव है। वहीं सरकार के द्वारा खोले गये पशु चिकित्सालय, पशु औशधालय, पशु सेवा केन्द्र, और कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों पर निर्धारित कर्मचारी नियुक्त किये जावें। वहीं कृषकों को भी पशुओं के चारे के लिए खेतों में अधिक से अधिक हरा चारा उगाया जाना चाहिए साथ ही पशुओं के लिए सही ढंग के बाडे बनाने चाहिए। तब जाकर पशुधन में वृद्धि सम्भव हो पायेगी। जिससे पशुपालक की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

संदर्भ सूची

1. Census of India- Uttar Pradesh Series-10, Part XII-B, District Census Handbook, Agra, 2011, p 24
2. www.animalhusb.upsdc.gov.in/en/schemes
3. www.updes.up.in
4. भारत की पशुगणना - 2012
5. मैमोरिय चतुर्भुज, भारत का वृहत भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा-2010, पृ0 246
6. डॉ. जहान सिंह चैहान, आधुनिक पशुपालन एवं एलोपैथिक चिकित्सा चार्ट।
7. खेमराज, पशु चिकित्सा, श्री कृष्णदास प्रकशन मुम्बई।